चन्डीगढ़ जागरण, 26-6-14

सेक्स से नहीं फैलती है फूलबहरी

लोगों में बीमारी को लेकर फैली कई भ्रांतियां, दोबारा भी हो सकती है फूलबहरी

जागरण संवाददाता, चंडीगढ़ : फूलबहरी फैलने वाली बीमारी नहीं है। न ही यह मरीज के गले लगने, चुंबन लेने या सेक्स करने से होती है। लोगों में मान्यता है कि विटामीन सी, मछली या सिट्रिक फूड खाने की वजह से यह बीमारी होती है। भारत में विटिलिगो के प्रति लोगों में कई प्रकार की भ्रांतियां हैं। डाक्टरों के मुताबिक असल में फूलबहरी कोई त्वचा की बीमारी नहीं है, बल्कि यह उस जगह त्वचा में पिगमेंटेशन समाप्त होने की निशानी है।

बीस वर्ष की उम्र से पहले होता है प्रकोप

मरीज के इतिहास और क्लीनिकल इग्जामिनेशन पर बीमारी का डायग्नोज किया जाता है। ज्यादातर मरीजों को 20 साल से पहले ही बीमारी हो जाती है। पीजीआई के डर्मेटोलॉजी विभाग में 625 मरीजों पर बीमारी को दस साल तक लंबी शोध हुई। बीमारी होने की औसत आयु 6.2 वर्ष बताई गई। हाथ व गले पर बीमारी सबसे पहले हमला करती है और इसके बाद लोअर लिंब्स, अपर लिंब्स समेत कुछ अन्य जगहों पर असर करती है। बेहतर इलाज के लिए समय पर जांच बहुत जरूरी है। मरीजों को नीम हकीमों से इलाज नहीं कराना चाहिए। इलाज का तरीका इस बात पर निर्भर करता है कि सफेद दाग कहां हैं, मरीज की कितनी उम्र है, दाग कितनी जगह पर फैले हैं। हर मरीज ट्रीटमेंट पर अलग व्यवहार करता है। विभाग के एडिशनल प्रो. देविंदर प्रसाद के मुताबिक मरीजों को टेक्रोलिम्स, प्रोस्टाग्लैंडिन एनालॉग्स, नैरो बैंड यूवीबी ट्रीटमेंट से पीजीआई में इलाज चलता है। जो मरीज आम ट्रीटमेंट से ठीक नहीं होते उनके सर्जरी विकल्प खुले रहते हैं। शोध में पाया गया कि जिन मरीजों का बीमारी में ट्रीटमेंट किया गया था उनमें से 83 प्रतिशत को दोबारा बीमारी हो गई। फिलहाल पीजीआइ त्वचा पर स्थित बालों और इसमें मौजूद मीलेनोसाइट्स और स्टेम सेल पर काम कर रहा है। इसके प्रभावी परिणाम सामने आ रहे हैं।

जेनेटिक कारणों से होती है बीमारी

फुलवहरी जेनेटिक कारणों, इम्यून सिस्टम में कमी व एनवायरमेंटल कारणों की वजह से होती है। बीमारी में त्वचा पर चकतों के अलावा कोई समस्या नहीं होती। त्वचा पर सबसे पहले टांगों, घुटनों के पीछे, कोहनियों, उंगलियों व चेहरे पर सफेद चकते शुरू होते हैं।

दुनिया में दो फीसद जनता इससे है प्रभावित

फूलबहरी त्वचा पर पड़ने वाले सफेद चकतों की बीमारी है। दुनिया की 0.5 से 2 प्रतिशत जनता इससे प्रभावित है। भारतीय समाज में बीमारी का जबरदस्त प्रभाव है क्योंकि न केवल बीमारी से त्रस्त मरीज बल्कि उसके परिजनों को भी झेलना पड़ता है। फूलबहरी किसी भी उम्र में शुरू हो सकती है और दोनों लिंग के लोगों को प्रभावित करती है। काले लोग बीमारी की जकड़ में ज्यादा आते हैं।

बीमारी की जागरूकता के लिए निकाली रैली

फुलवहरी दिवस के मौके पर पीजीआइ के डायरेक्टर प्रो. वाईके चावला ने रिक्शा रैली को झंडी दिखाकर रवाना किया। रिक्शा पर बीमारी के प्रति जागरुक करने को लेकर पोस्टर लगाए गए थे। फुलवहरी को लेकर बुकलेट भी तैयार की गई है। एक स्टेज प्ले भी दिखाया गया। वीआर फाउंडेशन के सीईओ डा. यान वले ने यूनाइटेड नेशन के सेक्रेटरी जनरल को ज्ञापन देने की मांग की जिसमें बीमारी को लेकर योजना तैयार करने की अपील करने को कहा गया। पीजीआइ में फूलबहरी का हर शुक्रवार क्लीनिक लगता है।